अभ्यास पत्रक

पाठ –नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. पद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"नए मकानों की पहचान
बहुत पुरानी है …
जितना जाना-पहचाना लगता है
उतना ही
रास्ता भुला देता है"

1. कवि को नए मकानों की पहचान 'पुरानी' क्यों लगती है?

उत्तर - .....

2. 'रास्ता भुला देता है' – यह पंक्ति किस मानसिक स्थिति को दर्शाती है?

उत्तर - .....

3. कवि इन पंक्तियों में किस प्रकार के अनुभव को बाँटना चाहता है?

उत्तर - .....

2. कथन और कारण पर आधारित प्रश्न (Assertion-Reason) – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** शहरों में बदलाव तेज़ी से होता है।
   कारण: हर जगह नए मकान और रास्ते पुराने निशानों को मिटा देते हैं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** कवि ने श्रमिकों की स्थिति पर आलोचना की है।
   कारण: क्योंकि वे खुशबू रचने के बावजूद समाज में उपेक्षित रहते हैं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही

3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. कविता के अनुसार 'नए मकान' किस बात का प्रतीक हैं?
   (क) विकास (ख) विस्मृति (ग) तकनीक (घ) सौंदर्य
7. 'अगरबत्तियाँ' कविता में किसका प्रतीक बनती हैं?
   (क) गंध का (ख) श्रमिकों के श्रम का (ग) पूजा का (घ) व्यापार का
8. 'खुशबू' और 'गंदगी' किस के बीच विरोधाभास को दर्शाते हैं?
   (क) शहर और गाँव (ख) अमीर और गरीब
   (ग) साधन और साधक (घ) काम और जीवन
9. 'नसों से भरे हाथ' किसकी छवि हैं?
   (क) बच्चों की (ख) दुकानदारों की (ग) बुज़ुर्ग श्रमिकों की (घ) माली की
10. कवि ने श्रमिकों के हाथों को किसके समान बताया है?
    (क) मंदिर के फूलों जैसे (ख) जूही की डाल जैसे (ग) दीपक जैसे (घ) जलती अगरबत्ती जैसे

eGyanarchive

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. कवि 'गली' और 'सड़क' को कैसे भिन्न रूपों में देखता है?

उत्तर - .....

.....

.....

12. कविता में 'बदबू और नालों' की पंक्तियाँ क्या दर्शाती हैं?

उत्तर - .....

.....

.....

13. 'गलियों के गाढ़े अँधेरे में' – इस प्रतीक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. कविता 'नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ' में कवि ने किन सामाजिक यथार्थों को उजागर किया है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "जो श्रमिक समाज को सुगंधित बनाते हैं, वे स्वयं उपेक्षा में जीते हैं" – इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

eGyanArchive

उत्तर कुंजी

1. क्योंकि हर नया मकान पुराने मकानों की नकल जैसा लगता है।
2. पहचान और स्मृति की उलझन; मानसिक द्वंद्व और अस्थिरता।
3. स्मृति, पहचान और समाज में बदलाव की पीड़ा।
4. (क)
5. (क)
6. (ख)
7. (ख)
8. (ग)
9. (ग)
10. (ख)
11. गली व्यक्ति की पहचान और काम की जगह है, सड़क समाज और विकास का प्रतीक है – दोनों का अपना अर्थ है।
12. यह श्रमिकों के कठिन जीवन, पर्यावरण की बदहाली और उपेक्षित समाज का चित्रण है।
13. यह जीवन की जटिलता, श्रमिकों की अनदेखी और अस्तित्व के संघर्ष का प्रतीक है।
14.

कविता में कवि ने समाज के उस वर्ग की ओर ध्यान खींचा है जो जीवन की गंदगी और कठिनाइयों के बीच भी समाज को सुगंधित करता है। अगरबत्ती बनाने वाले श्रमिक तंग गलियों, बदबू और अँधेरों में काम करते हैं, परंतु वही समाज के पूजाघरों और घरों में खुशबू फैलाने वाली चीजें बनाते हैं। कवि ने यह विरोधाभास बहुत मार्मिक रूप से चित्रित किया है। आधुनिक शहरों में बदलाव और विकास के नाम पर स्मृति और पहचान मिटती जा रही है। पुराने चिन्ह और रास्ते खत्म हो रहे हैं, और नई पहचान खोखली होती जा रही है। इस कविता में श्रम, सम्मान, पहचान और विस्मृति जैसे गहरे सामाजिक यथार्थ चित्रित हुए हैं।

15.

हमारे समाज में ऐसे करोड़ों श्रमिक हैं जो दिन-रात काम करते हैं – कुछ सड़क बनाते हैं, कुछ इमारतें, कुछ कपड़े, और कुछ अगरबत्तियाँ – परंतु उन्हें वह सम्मान और जीवन स्तर नहीं मिल पाता जिसके वे हकदार हैं। 'नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ' कविता इन्हीं श्रमिकों की गाथा है जो बदबू और गंदगी के बीच रहकर समाज को सुगंधित करते हैं। वे खुद तंग गलियों में रहते हैं, लेकिन उनके बनाए उत्पाद मंदिरों में जलते हैं। यह विरोधाभास समाज की संवेदनहीनता को उजागर करता है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि श्रमिक केवल श्रम करने वाले नहीं, समाज की नींव हैं। हमें उनके श्रम का मूल्य, सम्मान और जीवन की गरिमा लौटानी चाहिए। उनका योगदान मौन है, परंतु उसका प्रभाव गहरा है। जब तक हम इन्हें मुख्यधारा में नहीं लाएँगे, समाज की खुशबू अधूरी रहेगी।